

विचार बिन्दु

जो वस्तु आनंद प्रदान नहीं कर सकती, वह सुन्दर हो ही नहीं सकती। -प्रेमचंद

कच्ची नींव पर अच्छी इमारत नहीं बन सकती

राष्ट्रीय स्तर की संस्था 'प्रथम' द्वारा ग्रामीण भारत में प्रारम्भिक शिक्षा के स्तर को नापने के लिए सर्वेक्षण 2005 से किया जा रहा है। सर्वेक्षण के आधार पर प्रति वर्ष एक रिपोर्ट जारी की जाती है जो ASER (Annual Status of Education Report) के नाम से जानी जाती है। 2014 तक यह प्रति वर्ष जारी होती थी किन्तु इसके बाद यह हर दो साल में जारी की जा रही है। पहले केवल 5 से 14 वर्ष के बच्चों के शैक्षिक स्तर का आकलन किया जाता था। 2017 में पहली बार 14 से 18 वर्ष के बच्चों-युवाओं के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए यह सर्वेक्षण किया गया।

वर्ष 2023 की रिपोर्ट 'बिगडेट बेसिक' के नाम से जारी की गई। इस रिपोर्ट में 14 से 18 वर्ष के किशोरों को सर्वेक्षण में शामिल किया गया। यह सर्वेक्षण भारत के 26 राज्यों के 28 जिलों में किया गया। राजस्थान में इस सर्वेक्षण हेतु भीलवाड़ा जिले का चयन किया गया।

इस रिपोर्ट के आधार पर जो परिणाम सामने आए हैं वे चिंता जनक हैं।

पहले इस रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्षों का उल्लेख करना उचित होगा।

14 से 18 वर्ष के किशोरों में 86.8 प्रतिशत किसी न किसी शिक्षण संस्था में नामांकित हैं। 14 वर्ष से कम आयु के 3.9% नामांकित नहीं हैं जबकि 18 वर्ष से कम आयु के 39% नामांकित नहीं हैं। अध्ययनरत में से अधिकांश नामांकित युवा कला संकाय में नामांकित हैं। 11 वीं कक्षा या उसके ऊपर की कक्षा में अध्ययन करने वाले किशोरों में से 55.7% कला संकाय में 31.7% किसी तकनीकी या विज्ञान संकाय में एवं 9.4% वाणिज्य संकाय में नामांकित हैं। सर्वशिक्षित युवाओं में मातृभाषा में पढ़ने-लिखने और गणना की मूल दक्षताओं का आकलन किया गया। यह भी देखा गया कि वह इन योग्यताओं को किस प्रकार अपने दिव्य प्रतिदिन के काम आने वाली गतिविधियों में उपयोग कर सकते हैं।

14 से 18 वर्ष के 25% युवा, कक्षा 2 की मातृभाषा में लिखी हुई किसी पुस्तक को बिना अटक के हुए नहीं पढ़ सकते थे।

सर्वशिक्षित युवाओं में लगभग 50%, तीन अंकों की संख्या में एक अंक की संख्या का भाग देने में परेशानी महसूस कर रहे थे, जबकि यह दक्षता साधारणतया कक्षा तीन और चार के स्तर पर प्राप्त कर ली जानी चाहिए। बालिकाओं में 76% पढ़ने में समर्थ थी जो की बालकों की तुलना में बेहतर है क्योंकि लड़कों में 70.9% ही पढ़ने में समर्थ थे।

85% सर्वशिक्षित युवा, स्केल के माध्यम से लंबाई नाप सकते हैं यदि उसे जरी सेंटीमीटर से प्रारंभ किया जाए जैसे ही इसे किसी अन्य स्थापन से प्रारंभ किया जाए तो यह संख्या घटकर केवल 39% रह जाती है। 50% के लगभग युवा ही समय और गणना पर संबंधित गणना के सरल प्रश्न हल कर सकते हैं समर्थ थे। गणना के सभी कार्य लड़कियों की अपेक्षा लड़के बेहतर कर पाते थे।

लगभग एक तिहाई युवा ओआरएस पैकेट पर दिग्ग गणित की भी सही तरह पढ़ने में असमर्थ थे।

जो युवा सरल गणितीय गणना करने में समर्थ थे वह भी उनका उपयोग दिन प्रतिदिन की गतिविधियों में करने में अधिकांशतया सक्षम नहीं थे। इस दिशा में विशेष रूप से कार्य किए जाने की आवश्यकता है ताकि मूल दक्षताओं का उपयोग युवा अपने जीवन उपयोगी कार्यों में सुगमता से कर पाएं।

सर्वशिक्षित युवाओं के 90% परिवारों में स्मार्टफोन उपलब्ध था। इनमें से लड़कों में इसकी उपलब्धि 46.7% और लड़कियों में केवल 19.8% के पास यह स्मार्टफोन उपलब्ध था। जहां तक कंप्यूटर या लैपटॉप का प्रश्न है, सर्वशिक्षित घरों में केवल 9% के पास ही यह उपलब्ध था। यह भी देखा गया कि जिनके घरों में लैपटॉप उपलब्ध था उनमें से 85% उसे काम लेने में समर्थ थे और जिनके पास नहीं था उनमें से 34% ही ऐसे थे जो उन्हें काम लेना जानते थे।

जिन युवाओं के पास स्मार्टफोन था उनमें से दो तिहाई उसे पढ़ाई के लिए एवं उससे संबंधित कुछ समस्याओं का पर वीडियो आदि देखने में समर्थ थे।

असर 2023 के आधार पर मुख्य निष्कर्ष यह निकाला गया है कि पढ़ने-लिखने और गणना की मूल दक्षताओं में जहां सुधार करने की आवश्यकता है वहीं पर इन अर्जित दक्षताओं का उपयोग दिन प्रति दिन करने में करने पर बल देने की और भी अधिक आवश्यकता है। ऐसा होने पर ही भारत 'डेटाड्राइव डिजिटल' का पात्र कहला सकता है। अन्यथा प्रगति की दौड़ में भारत के युवा धीरे-धीरे पिछड़ते ही जाएंगे अतः सरकारों की 14 से 18 वर्ष के युवाओं पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।

जब हमने हाल ही में अमृत महत्सव वर्ष मनाया और स्वतंत्रता के 76 वर्ष पूरे हो चुके हैं। अब भी 14 से 18 वर्ष के 25% बच्चे दूसरी कक्षा की साधारण मातृभाषा को कितना भी नहीं पढ़ सकते और सरल गणना नहीं कर सकते। अनिर्णित प्रयोग शिक्षाविदों ने शिक्षा में किए हैं। कई प्रकार की योजनाएं बनाई गईं और वर्ष 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी जारी की गई। असर का परिणाम देखकर तो ऐसा लगता है कि शिक्षा के स्तर में गिरावट हो आई है। यह तब है जबकि राजकीय विद्यालयों के शिक्षक, शिक्षक - प्रशिक्षण प्राप्त हैं एवं उन्हें अच्छा-खासा वेतन भी प्राप्त होता है। इसके बावजूद यदि ग्रामीण

दुर्भाग्य तो यह है कि विभिन्न दल सत्ता में आए किंतु किसी ने भी इस ओर कोई विशेष ध्यान देने का प्रयास नहीं किया। राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों से केवल नामांकन बढ़ाने की अपेक्षा की जाती है और इसी कारण नामांकन की दृष्टि से आंकड़े लगभग शत प्रतिशत के पास कई साल पहले ही पहुंच चुके हैं। बोर्ड की परीक्षाओं का स्तर इतना कमजोर हो गया है कि सभी का उत्तीर्ण होना युवाओं को कोई उत्पादक कार्य करने के योग्य नहीं बना पाता है।

युवाओं की साधन अपना कर रोजगार प्राप्त कर सकेगा? बेरोजगारी का सबसे बड़ा कारण ही आज यह है कि जो युवा रोजगार के जाल में प्रतिकर्षित करीबों की संख्या में जुड़ रहे हैं, वे नियोजन के लिए अथवा स्वयं किसी प्रकार का व्यवसाय करके पर्याप्त आय जुटाने में समर्थ नहीं हो पा रहे हैं। असर के सर्वे में यह भी पता लगा है कि कई परिवारों के पास स्मार्टफोन है। कई बार तो इनके कारण मानसिक विकृतियां उत्पन्न हो रही हैं। ऐसे परिवेश में देश के भविष्य पर एक प्रकार का प्रश्न चिह्न अवश्य लगता है। एक ओर जहां भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के कारण पर है, वहीं करीबों की संख्या में युवा, यदि कुछ भी लिखने-पढ़ने और गणना करने में समर्थ नहीं होंगे तो वह आगे किसी प्रकार पढ़ाई करने में सफल हो पाएंगे।

दुर्भाग्य तो यह है कि विभिन्न दल सत्ता में आए किंतु किसी ने भी इस ओर कोई विशेष ध्यान देने का प्रयास नहीं किया। राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों से केवल नामांकन बढ़ाने की अपेक्षा की जाती है और इसी कारण नामांकन की दृष्टि से आंकड़े लगभग शत प्रतिशत के पास कई साल पहले ही पहुंच चुके हैं। बोर्ड की परीक्षाओं का स्तर इतना कमजोर हो गया है कि सभी का उत्तीर्ण होना युवाओं को कोई उत्पादक कार्य करने के योग्य नहीं बना पाता है। कुछ दशक पूर्व, पांचवीं या आठवीं पास व्यक्ति भी शुद्ध भाषा लिख पाता था और गणना की क्रियाएं न केवल कर पाता था अपितु कई बार तो वह मौखिक रूप से भी ऐसा करने में सक्षम होते थे। जैसे-जैसे हमने शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के नाम पर जो भी प्रयोग किए वे वास्तव में प्रारंभिक शिक्षा के स्तर को कमजोर करने वाले ही सिद्ध हुए। अपना परिणाम बेहतर बनाने के लिए हमने उत्तीर्ण होने के मापदंड को कम कर दिया। यह वैसा ही है जैसे ऊंची कूद वाले के लिए अर्हता 2 मीटर रखी जाए तो बहुत थोड़े लोग सफल हो पाएंगे लेकिन यदि इसको घटकर एक मीटर कर दिया जाए तो लगभग सभी सफल हो जाएंगे। शिक्षा के साथ ही ऐसा ही कुछ हो रहा है। बोर्ड की परीक्षाओं के परिणाम आंकड़ों 90-95% रहते हैं, किंतु दसवीं पास विद्यार्थी यदि पुनः नमय के पांचवीं के बराबर भी योग्यता नहीं रखते हैं तो फिर इस प्रकार की तथ्यांकित पढ़ाई का लाभ क्या है? यदि हम चाहते हैं कि आज के बालक-बालिका, सक्षम नागरिक के रूप में उभरें, तो इसके लिए पहले ही सर्वसे महत्वपूर्ण आवश्यकता यह है कि नींव को, अर्थात् प्रारंभिक शिक्षा को मजबूत किया जाए। किसी भवन को कमजोर नींव पर कितनी ही भव्य इमारत बनाने का प्रयास किया जाए वह सम्भव ही नहीं है। या तो वह बेमौल हो और कभी दिखाने के लिए बना भी तो दीर्घ, तो उसके बहने में अधिक समय नहीं लगेगा। राजस्थान के परिप्रेष्य में देखें, एक आदमी निकाल कर बड़ी संख्या में विद्यालय तो खोल दिए जाते हैं, किंतु कई वर्षों तक उनमें महत्वपूर्ण शिक्षकों के पद रिक्त हो पड़े रहते हैं। कोई भी शिक्षा संभव कैसे है जब बालकों के लिए शिक्षक ही उपलब्ध नहीं है? हाल ही में उदयपुर की यात्रा के समय कोटडा में पर स्थापित एक प्रश्नाचार्य ने बताया कि उनके विद्यालय में 450 विद्यार्थी हैं और उनके अलावा केवल एक ही शिक्षक है। कल्पना कीजिए, उन बच्चों की शिक्षा की, जिस विद्यालय में 450 विद्यार्थी और 12 कक्षाएं हैं।

सरकार का कोई अधिकारी या मंत्री, चाहे वह भारत सरकार का हो या राज्य सरकार का, इस रिपोर्ट को किसी न किसी रूप में गलत बताने का प्रयास करेंगे। किंतु वास्तविकता में रिपोर्ट कितनी सही है, यह प्रत्येक वह व्यक्ति जानता है जिसने कभी ग्रामीण क्षेत्र में जाकर स्कूलों का निष्पक्ष, निरपेक्ष रूप से आकलन करने का प्रयास किया हो। प्रारंभिक शिक्षा का किस प्रकार जीवन में उपयोग हो सकता है और जीवन में उपयोगी बहुत सारे काम जो बच्चों के लिए उपयोगी हैं वह किस प्रकार से शिक्षा के माध्यम से हो सकते हैं इस संबंध में विशेष प्रयास किए जाने की आवश्यक है। यह भाषा एवं गणना की मूलभूत दक्षता के बिना सम्भव नहीं है। वैसे तो यह सारी दक्षता बच्चों के पाठ्यक्रम के अनुसार पांचवीं कक्षा तक ही आ जानी चाहिए, किंतु हकीकत तो 'असर' ने दिखाई है। शिक्षा की सही स्थिति जब कोई सामने लाने का प्रयास करता है तो उसे ही गलत सिद्ध करने की कोशिश की जाती है। यह वैसा ही है जैसे खराब तो चेहरा हो, किंतु आईने को दोष देकर उसे साफ करने की कोशिश करते रहें। इस प्रयोग को छोड़कर सच को स्वीकार करने का साहस तो जनप्रतिनिधियों और शिक्षा के उच्च अधिकारियों को जुटाना ही होगा।

मैंने स्वयं ने, इसी संवादकीय के विभिन्न स्तंभों में कई बार इस बात का उल्लेख किया है कि कैसे प्रारंभिक शिक्षा के स्तर को सुधारा जा सकता है। आवश्यकता केवल इसी बात की है कि ईमानदारी से इस ओर दोसरा प्रयास किए जाएं। देश में बहुत बड़ी संख्या में 12 वीं के विद्यालय, महाविद्यालय, तकनीकी महाविद्यालय आदि खोल दिए गए हैं। उन सब की शिक्षा ग्रहण करने में ग्रामीण क्षेत्र का वह बच्चा कैसे समर्थ हो पाएगा यदि उसकी नींव मजबूत नहीं है। स्वीच्छक शैक्षिक संस्थाएं इस ओर महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। राजस्थान में नई सरकार बनी है। उससे यह अपेक्षा की जा सकती है कि वह शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए राजकीय विद्यालयों के रिक्त पदों को शीघ्र भरना सुनिश्चित करें और जो भी स्वीच्छक संस्थाएं ईमानदारी, निष्ठा और समर्पण के साथ इस क्षेत्र में कार्य करना चाहें, उन्हें प्रोत्साहित करें। नागरिक समुदाय और विभाग, दोनों के प्रयास मिलकर दुगुने हो जाएंगे और शिक्षा के स्तर में तेजी से सुधार सम्भव है।

बोर्ड को भी अपनी परीक्षा पद्धति पर ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि जो बच्चा बोर्ड की परीक्षा उत्तीर्ण करके निकले, वह वास्तव में अधिष्ठित दक्षताएं रखता हो ताकि वह भविष्य में उच्च शिक्षा ठाठण करना चाहे तो उसे कोई असुविधा न हो और साथ ही यदि वह अपने जीविकोपार्जन का कोई अन्य मार्ग अपनाता चाहे तो उसमें भी अधिक सफलतापूर्वक कार्य कर सके।

आशा की जानी चाहिए कि 'असर' को इस रिपोर्ट को गंभीरता से लिया जाएगा एवं इस पर एक संवाद स्थापित करने के बाद उसके परिणाम स्वरूप आवश्यक कार्य योजना बनाकर काम किया जाएगा ताकि जब 'असर' की आगामी रिपोर्ट आए तो उसमें बेहतर संतोषजनक परिणाम हम प्राप्त कर सकें।

इस दिशा में अब और समय व्यर्थ नहीं कर सकते हैं। अब और देर करने पर, देश की युवा पीढ़ी के साथ तो अन्याय होगा ही, देश के उज्वल भविष्य पर भी प्रश्न चिह्न लगेगा।

-अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भागवत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

अयोध्या में रामलला की प्रतिष्ठा वसुधैव कुटुम्बकम की प्रतिष्ठा है



डॉ. सतीश पुनियां

विश्व के इतिहास में 22 जनवरी 2024 की तारीख युगों-युगों तक याद दायी जाएगी। यह सिर्फ इसलिए नहीं कि इस दिन सनातन हिंदुओं के आराध्य प्रभु श्रीराम लला की प्राण प्रतिष्ठा हुई, बल्कि इसलिए भी कि भारत के धर्म, बलिदान, त्याग और तपस्या की भी प्राण प्रतिष्ठा हुई है। अयोध्या में रामलला प्राण प्रतिष्ठा के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने उद्बोधन में भी कहा कि यह नए कालचक्र का उदगम है। भारत सहित दुनिया के 160 देशों में बसे हिंदुओं के लिए 22 जनवरी का दिन कई सदियों बाद आई जीवन्त दीपावली है। दुनियाभर के हिंदुओं के मन के भावों को टीवी स्क्रीन पर उनके उत्साह से देखा और महसूस किया गया।

मैं स्वयं दो बार वर्ष 1990 और 1992 की अयोध्या कारसेवाओं में रहा हूँ। मैं व्यक्तिगत तौर पर इस पल को

अनुभव कर सकता हूँ। मैं अपने भावों को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। ऐसा मान लीजिए कि ईश्वर की तपस्या करने वाले के सामने उसके ईश्वर साक्षात प्रकट हो गए हों। यह तो पक्का विश्वास था कि जिस स्थान पर हमने कारसेवा की थी, वहां रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी, लेकिन यह पल हमारे जीवन में ही आ जाएगा, यह विश्वास नहीं था। अब जब पावन नगरी अयोध्या में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और सनातन की सभी परंपराओं के साधु-संतों-संन्यासियों की साक्षात उपस्थिति में भगवान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हुई है, तो निश्चित ही यह संपूर्ण भारतवर्ष के आत्मविश्वास, आत्मगौरव और श्रद्धा को कई गुना बढ़ाने वाला पल हमारे उस अधूरे विश्वास की पूर्णाति करने वाला अवसर बन गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने भाषण में कहा कि यह मंदिर गुलामी की मानसिकता को तोड़कर उठने वाले राष्ट्र की पहचान का मंदिर है और नव इतिहास का सृजन करता है। अयोध्या का भव्य राम मंदिर सिर्फ भारत के वैभवशाली गौरव का ही दर्शन नहीं करवाता, बल्कि भारत के भविष्य की भी तस्वीर प्रस्तुत करता है।

यह भारत के लोगों के उस अदम्य धैर्य और त्याग का भी प्रतीक है कि अपने ही देश में अपने ही आराध्य के मंदिर के लिए पांच सौ साल से संघर्ष करते करते कई पीढ़ियां गुजर गईं, लेकिन हमने अपने अपनी श्रद्धा को मजबूती से पकड़े रखा। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कई देश अपनी ऐतिहासिक गांठों को उलझाने में उलझ गए, लेकिन भारत ही ऐसा देश है जिसने अपनी ऐतिहासिक गांठ को न्यायपूर्ण तरीके से और सबके आपसी समन्वय से सुलझा लिया। राम भारत की आत्मा में बसते हैं। रामलला प्राण प्रतिष्ठा से पहले देश के सभी परिवारों को अयोध्या आने के लिए पीले अक्षतों का वितरण हुआ। जिस तरह से देशभर में पीले चावलों के लिए परिवार प्रतीक्षा कर रहे थे, वह हमारी आस्था और तपस्या पूरी होने के भाव को दर्शाता है। हर परिवार इस बात को लेकर उत्सुक था कि अब उनके राम टैट में नहीं, बल्कि भव्य प्रासाद में विराजित होंगे और उन्हें उनके भव्य और दिव्य दर्शन होंगे। इसके लिए आने वाले दिनों में हरेक राज्य से विशेष रेलगाड़ियां भी चलाई जाने की योजना बन रही है।

अयोध्या में रामलला प्राण प्रतिष्ठा साक्षात मानवीय मूल्यों और सर्वोच्च आदर्शों की स्थापना थी है। भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। इस दृष्टि से रामलला का यह भव्य मंदिर राष्ट्र की चेतना का मंदिर है। भगवान राम सदियों से भारतवर्ष की चेतना में रहे हुए हैं। प्रधानमंत्री ने भी कहा है कि यह भारत की दृष्टि और दर्शन का मंदिर है। जब राम की प्रतिष्ठा होती है तो उसका प्रभाव हजारों हजार वर्षों के लिए होता है। राम की दृष्टि ही भारत की दृष्टि है। भारत राम की दृष्टि के साथ पूरे विश्व का मार्गदर्शन कर रहा है। पिछले नौ-दस वर्षों में जिस तरह से वैश्विक

घटनाओं में भारत ने अपनी दृष्टि से दुनिया का नेतृत्व किया, उसका लोहा पूरे विश्व में माना है। चाहे वह कोविड का दौर हो या फिर युकेन-रूस और हमारा-इजराइली संघर्ष हो। भारत ने अपने आराध्यों के दर्शन से पूरी दुनिया को एक दृष्टि देने का काम किया है।

प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रधानमंत्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि आने वाला समय सिद्धी का है। निश्चित ही संस्कृत के बाद सिद्धी का समय होता है। हमारा सदियों पुराना संस्कृत पुरा हुआ है और अब समय आगे बढ़ने का है। कई सदियों के संघर्ष के बाद हम यहां पहुंचे हैं। निश्चित तौर पर यह मह सकता है कि आने वाला समय भारत का है। भारत की युवा पीढ़ी का है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत के युवाओं के सामने हजारों वर्षों की प्रेरणा है। इस वक्त पर सकारात्मक परिस्थितियां हैं, इसलिए हमें बैठना नहीं है। भारत निश्चित ही समृद्धि के लक्ष्य पर पहुंचेगा। जिस तरह से पूरी दुनिया में भारत की नई पीढ़ी नेतृत्व कर रही है, यह बात मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूँ कि पूरी दुनिया का भरोसा भारत पर बढा है। फिर चाहे हम जो-दुवटी की बात करें या फिर दुनियाभर के ताकतवर और छोटे देशों के साथ भारत के द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंध, हर मोर्चे पर भारत ने दुनियाभर के मुल्कों के साथ अपने संबंधों को मजबूत, आत्मवी और गहरा किया है। भारत ने उन बहुत छोटे छोटे देशों से भी अपने संबंध प्रगाढ़ बनाए हैं जहां

पूर्ववर्ती सरकारों के प्रतिनिधि पहुंच ही नहीं पाए थे। प्रधानमंत्री मोदी जब कहते हैं कि सबका साथ सबका विकास, तो वह सिर्फ भारत के लिए ही यह बात नहीं करते, वह पूरी दुनिया के लिए कहते हैं। उन्होंने अयोध्या में राम मंदिर के लिए भी कहा है कि रामलला की प्रतिष्ठा वसुधैव कुटुम्बकम की प्रतिष्ठा है। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का यह क्षण हमें कर्तव्य भी करवाता है। प्रधानमंत्री ने तीन सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किए। गिलहरी, निषादराज और जटायु का। जिस तरह रामकाव्य के लिए गिलहरी और जटायु ने अपनी क्षमताओं के बावजूद अपने कर्तव्यों से मुंह नहीं मोड़ा था। माता सीता की सुरक्षा लिए जटायु महाबली रावण से पिंड्रुया था। उसे पता था कि वह रावण से जीत नहीं सकता, लेकिन इसके बाद भी उसने अपना कर्तव्य पूरी तरह निभाया। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा में भी हजारों कारसेवक अपना कर्तव्य निभाते हुए बलिदान हो गए। उन्हें भरोसा था कि कभी न कभी उनकी आहूति रामलला की प्राण प्रतिष्ठा में समिधा बनेगी। अयोध्या में रामलला का भव्य और दिव्य प्रेरणादायी मंदिर विश्व के सामने भारत की अटूट आस्था, त्याग, बलिदान और पुरुषार्थ का साक्षात उदाहरण बनकर खड़ा है, जो पूरे विश्व को हजारों साल तक प्रेरणा देता रहेगा।

- डॉ. सतीश पुनियां,
(लेखक भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व प्रदेशाध्यक्ष हैं)।

नई सरकार की प्राथमिकताएं



भागीरथ शर्मा

"लेखक भारतीय अर्थशास्त्रिक सेवा के पूर्व अधिकारी प्रशासनिक कार्यक्रम के प्रभारी एवं राज्य प्रशासनिक सुधार आयोग, राजस्थान के सदस्य व विश्व बैंक के सलाहकार रहे हैं। कार्यक्रम के प्रारम्भ होने से पूर्व एक संक्षिप्त 'अप्रोच पेपर' तैयार किया गया एवं राज्य विधान सभा के बजट सत्र में सितम्बर, 1977 में घोषणा कर 2 अक्टूबर, 1977 से अन्त्योदय के प्रथम दौर का कार्यक्रम लागू कर दिया गया। उक्त पेपर के आधार पर राज्य के सभी लाभार्थी 33000 गांवों में से प्रत्येक गांव से 5 निर्यतन परिवारों का चयन कर उन्हें लाभान्वित करने का लक्ष्य रखा गया था। इसके पश्चात, जून, 1978 में इस नूतन योजना की प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार की गई, जिसके आधार पर तत्कालीन कृषि पुनर्विनिर्माण से 187 करोड़ों की ऋण राशि की सैद्धांतिक स्वीकृति भी प्राप्त की गई एवं इस परियोजना प्रतिवेदन की प्रति तत्कालीन मुख्यमंत्री महोदय श्रीमान भैरसिंहजी शैखावत द्वारा लोक न्यायक जयकाश नारायणजी को पटना सम्मेलन में भी प्रस्तुत की गई।

कार्यक्रम की रूपरेखा :- अन्त्योदय का शाब्दिक अर्थ है - 'अन्तिम पंक्ति के आखरी व्यक्ति का आर्थिक उत्थान' -सर्वाधिक निर्यतन व्यक्ति का चयन कर उसे सबसे पहले लाभान्वित करना ही इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य था। कार्यक्रम के लाभ को प्रक्रिया नीचे से प्रारम्भ होकर वार्षिक चक्रों से चक्र दर चक्र उपर की ओर बढ़ाना ही प्रमुख लक्ष्य रखा गया था।

चयन का आधार केवल 'आर्थिक निर्धनता' ही रखा गया था चाहे वह व्यक्ति किसी भी जाति, धर्म समुदाय का हो। कार्यक्रम क्षेत्रीय असमानता से सर्वथा मुक्त करा गया था। राज्य के सभी 33000 ग्रामों में जनसंख्या के अनुपात में प्रतिबंध 3,5,7 व 10 परिवारों का चयन कर उसी वर्ष के वार्षिक चक्र में ही उन्हें लाभान्वित कर दिया जाने की क्रियान्वयन प्रक्रिया निर्धारित की गई थी। इस अभियान के दौरान ग्रामीण विकास, पंचायती राज

एवं राज्यस्व अधिकारियों ने गांव-गांव में शिखर आयोजित कर ग्राम सभाओं में निर्धनतम परिवारों का चयन किया एवं उनकी आर्थिक संसाधन देने के लिए साधन सभा द्वारा चयनित परिवारों से प्राप्त 'संसाधन विकल्पों' का अनुमोदन कारक मौके पर ही सहायता व ऋण प्रार्थना पत्र तैयार करने की प्रक्रिया अपनाई गई।

निर्धनतम परिवारों को आर्थिक संसाधन उपलब्ध करने में सबसे बड़ी बाधा अनुदान के साथ ऋण उपलब्धता की थी। बैंक, जमानत व जटिल प्रक्रिया पूरी किये बिना ऋण नहीं देते थे। अधिकांश प्रयोजनों के साथ जमीन रहन रहना आवश्यक था। इस हेतु भारतीय रिजर्व बैंक को राज्य की ओर से एक विस्तृत ज्ञापन प्रस्तुत कर डिप्टी गवर्नर रिजर्व बैंक के साथ जून, 1978 में ही परियोजना प्रतिवेदन प्रस्तुत कर उच्च स्तरीय बैठक रिजर्व बैंक मुख्यालय पर करवाई गई एवं रिजर्व बैंक की ऋण नीति में प्रथम बार भारी संख्या में आमूलचूल परिवर्तन करवाए गये। डिप्टी गवर्नर रिजर्व बैंक को राज्य के 7-8 जिलों का सघन दौरा काय्यकर आवश्यक भी किया गया एवं इसी आधार पर 5 चक्रों प्रोजेक्ट अर्थात् में लगभग 6 लाख परिवारों को लाभान्वित करने हेतु 187 करोड़ रूपये की ऋण राशि उपलब्ध कराने का निर्णय कराया गया।

कार्यक्रम की क्रियान्विति के लिए पंचायती राज संस्थाओं एवं जिला प्रशासन को उत्तरदायी बनाया गया एवं प्रति पखवाड़ प्रगति की सूचना प्राप्त कर प्रगति की समीक्षा की भी नई प्रणाली लागू की गई जिसमें जिलों के नाम उनकी प्रगति को प्रगति के आधार पर क्रमवार लिखे जाते थे एवं बीच में 'राज्य औसत' की रेखा अंकित की जाती थी।

प्रशासनिक व्यवस्था :- कार्यक्रम के क्रियान्वयन व्यवस्था में नीतिगत निर्णयों हेतु राज्य में उच्चतम स्तर पर मुख्यमंत्री महोदय के अध्यक्षता में नीति निर्धारण समिति का दिनांकित सचिव श्री बागला ने स्वयं परीक्षण मूल्यांकन गांवों में जाकर किये एवं उनकी रिपोर्ट में इस योजना की

उपलब्धियों की प्रशंसा की गई। परिवारों की आय में वृद्धि, कारगर क्रियान्विति व्यवस्था, पश्चातवर्ती देखरेख, कारगर चयन प्रक्रिया, ग्राम सभा की भागीदारी से सभी ग्रामीणों को इस योजना का ज्ञान, चयनित परिवार एवं उन्हें दिये गये लाभ की बच्चे-बच्चे को जाकारी होना आदि इस योजना की विशेषताएं बताई गई एवं इस योजना की उपलब्धियों को प्रशंसनीय बताया।

दुर्भाग्यवश राज्य में 1979-80 में सरकार परिवर्तन के साथ इस अनूठे कार्यक्रम को, जो गरीबी उन्मूलन के लिए लागू किये गये अब तक के सभी कार्यक्रमों में सबसे अधिक लोकप्रिय एवं कारगर कार्यक्रम था, एवं केवल दो चक्र ही पूरे हुए थे, कांग्रेस की नई सरकार द्वारा अचानक बन्द कर दिया गया। जिसकी तीखी प्रतिक्रिया हुई एवं इसका यह लाभ अवश्य हुआ कि तत्कालीन केन्द्रीय सरकार ने इस कार्यक्रम से प्रेरित होकर इसके विकल्प के रूप में एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम पूरे देश में लागू कर दिया। पर उक्त कार्यक्रम जिसे अलग स्वयं जयन्ती उत्सवकार कार्यक्रम माना दिया गया है, अभी तक भी लगभग 2 दशक से अधिक अवधि में भी वे सफलताएं अर्जित नहीं कर पाया है जो 2 वर्ष की ही अल्पावधि में अन्त्योदय कार्यक्रम में की गई थी। अन्त्योदय की कारगर चयन व क्रियान्विति प्रक्रिया, पश्चातवर्ती देखरेख व्यवस्था तथा पंचायती राजों के अन्य कार्यक्रमों एवं विपणन व्यवस्था से सुदृढ़ कड़ीबन्धन आदि विशेषताओं का अभाव, आज भी एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम की सबसे बड़ी कमजोरी है। तत्कालीन भाजपा सरकार द्वारा राजस्थान में ही चलाये गये अन्त्योदय कार्यक्रम ने जो जन-जन में विश्वास अर्जित कर अपनी साख पैदा की थी वह अन्य किसी भी कार्यक्रम में नहीं हो पाया है। ऐसे लोकप्रिय कार्यक्रम को गरीबी उन्मूलन का प्रमुख कार्यक्रम बनाकर पुनः नयी भाजपा सरकार द्वारा पूरे प्रदेश में पुनः लागू किया जाना सामयिक होगा।

मूल्यांकन :- राज्य में लागू की गई इस अनूठी योजना से प्रभावित होकर हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक आदि कई राज्यों से एवं श्रीलंका, मलेशिया आदि अन्य देशों के प्रतिनिधिगण एवं विश्व बैंक के उस समय के अध्यक्ष मेकना मारा राष्ट्रीय अनुसूचित जाति जनजाति आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष भोला पासवान आदि ने राज्य में आकर इस योजना को देखा एवं सराहना की। कुछ राज्यों ने इस योजना को अपने यहाँ लागू भी कर दिया। हिमाचल में यह योजना सम्भवतः पूर्वोत्तरास कुल वर्ष पूर्व तक चलाई।

योजना आयोग के मूल्यांकन सम्मग्रा द्वारा अन्त्योदय के दोनों ही चक्रों (1977-78 व 1978-79) का सघन मूल्यांकन करवाया गया। केन्द्र में अन्य पार्टी का शासन होने के कारण यह मूल्यांकन और भी गहराई से किया गया। क्योंकि इस योजना की भारी सफलता एवं प्रशंसा से वे अत्यन्त ही चिन्तित हो रहे थे। अन्त्योदय के अतिरिक्त सचिव श्री बागला ने स्वयं परीक्षण मूल्यांकन गांवों में जाकर किये एवं उनकी रिपोर्ट में इस योजना की

- भागीरथ शर्मा,
आई. ए. एस. (से.नि)।

राशिफल मंगलवार 23 जनवरी, 2024



पंडित अनिल शर्मा

पौष मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत् 2080, आर्द्रा नक्षत्र बुधवार प्रातः 6:26 तक, ऐन्द्रयन योग प्रातः 8:04 तक, कोलव करण प्रातः 8:16 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरु-मेघ, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज यमघट योग सूर्योदय से बुधवार प्रातः 6:26 तक है। रवियोग बुधवार प्रातः 6:26 तक बना रहेगा। आज भौम प्रदोष व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:54 से 11:19 तक, लाभ-अमृत 11:19 से 1:58 तक, शुभ 3:18 से 4:37 तक। राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:57



मेघ

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।



वृष

आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।



मिथुन

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक शोभाता/सुगमता से बनने लगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।



कर्क

व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मानसिक तनाव और मन में असंतोष बना रहेगा। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा।



सिंह

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।



कन्या

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक शोभाता/सुगमता से बनने लगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।



तुला

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



वृश्चिक

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्ययधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को दालना पड़ सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

